© 2017 IJSRSET | Volume 3, Issue 8, November-December-2017
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1257-1264

संस्कृत–साहित्य में वनस्पति विज्ञान :

डॉ0 अनिता सेनगुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत
ईश्वर शरण डिग्री कालेज,
इलाहाबाद

शोध आलेख सार– संस्कृत साहित्य में ओषधि शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग हुआ है, इसमें सभी प्रकार के वृक्ष वनस्पति आ जाते हैं। औषधियों के मुख्य रूप से दो भेद है – वनस्पति और ओषधि। वृक्षों के लिए वनस्पति शब्द है और छोटे पौधों के लिए औषधि शब्द। ऋग्वेद में वनस्पति के दो भेद किए गए हैं–वनस्पति और वानस्पत्य। बड़े वृक्षों के लिए वनस्पति और अपेक्षाकृत छोटे वृक्षों के लिए वानस्पत्य शब्द। इसी प्रकार ओषधि के भी दो भेद किए गए है– ओषधि और वीरुध्। छोटे पौधें के रूप में होने वाले को ओषधि और लता गुल्मादि के रूप में होने वाले को वीरुध् कहा गया है। प्रस्तुत लेख संस्कृत वाङ्मय में निहित वनस्पति विज्ञान पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द– संस्कृत, साहित्य, ओषधि, वनस्पति, वानस्पत्य, वाङ्मय।

भारतीय मनीषा ने वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में जो गहन चिन्तन और अनेक अनुसन्धान किये उससे संस्कृत–साहित्य भरा पड़ा है। ईस्वी सन् 1363 में संस्कृत के कवि शांर्गधर द्वारा संकलित ''शांर्गधरपद्धतिः'' नामक बृहत् ग्रन्थ के 'वृक्षायुर्वेद' नामक परिच्छेद में वृक्षों से सम्बन्धित कई विधियों का उल्लेख श्लोक–संख्या 2082–2328 तक में किया गया है। इस ग्रन्थ में वृक्षों के विचित्रीकरण जैसे–गन्धहीन वृक्षों के पुष्पों का सुगन्धित हो जाना, कपास के वृक्ष में विभिन्न नीलपीतादि वर्ण की रूई पैदा होना, अकाल में भी पुष्प एवं फल का होना, वृक्ष का फल बिना गुठली के तथा स्वादिष्ट होना, बीजों का जल्दी उगना, केले के वृक्ष का हाथी के सूँड के आकार का फल देना, आम के वृक्ष का लतारूप में हो जाना आदि के लिये विभिन्न विधियों का उल्लेख किया गया है।

इसी क्रम में संवत् 1925 में लिखित ''पुष्पवाटिकाविधिः'' नामक एक लघु हस्तलेख में भी वृक्षायुर्वेद से सम्बन्धित विधियों के अन्तर्गत वृक्षों में फलों और फूलों की अतिशय वृद्धि, फलों का आकार बड़ा होना, वृक्षों में

तत्काल फल आ जाना, जो वृक्ष नहीं फूलते हों उनमें फल आ जाना, अधिक मात्रा में फल लगना, गन्धहीन वृक्षों में अनार जैसे फल होने लगना आदि से सम्बन्धित विभिन्न विधियों की जानकारी का उल्लेख मिलता है। इन विधियों के अन्तर्गत मांस, मदिरा, वादि वस्तुओं के प्रयोग की बात कही गई है, किन्तु ऐसी अपवित्र वस्तुओं के प्रयोग के बाद भी उन वृक्षों के फूल और फल दोषयुक्त नहीं मान जाते ऐसा हमारे शास्त्रों में उद्धृत हैं। कृषि, उद्यान, बाग आदि कार्यों में रूचि रखने वाले लोग इन विधियों का प्रयोग कर सिद्ध करने का प्रयास अवश्य कर सकते हैं।

''शार्ंगधरपद्धतिः'' एवम् ''पुष्पवाटिकाविधिः'' नामक दोनों ग्रन्थों के आधार पर आम, अनार, केला, नारंगी, अंगूर, मानुलिंग, बेर, आँवला, नारियल, नीम, कूष्माण्ड, बिल्व, कतिपत्थ, कपास तथा कनेर आदि वृक्षों के फलों में होने वाले आश्चर्यजनक परिणाम से सम्बन्धित विधियों को इस लेख में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

(1) आम–आम के बीज (गुठली) के नीचे के भाग में छेदकर उसमें मुलेठी, श्वेतकूट, शहद तथा महुआ के फूलों से बनाया गया पिण्ड भर दिया जाय तो उससे उत्पन्न होने वाला वृक्ष अत्यन्त मधुर फल देने वाला हो जाता है–

''आम्रादि वृक्षफलवीजं मूले निष्कुस्य कृत–च्छिद्रं तन्मध्ये मधुयष्टिश्वेतकुष्टमधूकपुष्पाणां पिण्डेन भरितं व्युत्पमति–स्वादुफलं वृक्षं करोति।''[1]

सुअर की चर्बी, गाय का घी और शहद से आप्लावित अंकोल के फल के रस से सेचन करने से (न फलने वाला भी) आम फलने लगता है–

''शूकरमेदो गोसर्पिर्मधुभिः आप्लावितेन।

अंकोलफलरसेन सेकात् आम्राः फलन्ति।।[2]

थाले में मुर्ग का मल डालने से तथा मछली के मांस से मिश्रित जल से सींचने पर आम अधिक सुगन्धित होते हैं–

''कुक्कुटविष्टा विचित्रताधोभागझषपिशितमिश्रितताजलसेकात् आम्राः सहकारा भवन्ति।''[3]

शश (खरगोश) कछुआ इनके रूधिर से भावित आम के बीज को लगाकर दुग्ध से सेचन करने से सर्वकाल में फल देता है–

"शशकूर्मासृग्मध्ये बहुभावितमाम्रजं बीजम्।

रूढ़ं सिक्तं दुग्धैः फलाति फलं सर्वकालेषु।।"[4]

नागरमोथा, जामुन के पत्ते तथा खस से पकाये जल से सींचने से आम अतिसौरभयुक्त हो जाता है–

"मुस्ताराजजम्बूपत्रोशीरैः क्वथितजलेन सेकात् आम्रः सहकारो भवति।"[5]

घोड़ा, हिरन, सुअर, सियार तथा बैल की चर्बी के साथ पूर्वोक्त पल्लवों के साथ पकाये गये जलमिश्रित दुग्ध से सींचने से आम सुगन्धियुक्त हो जाता है–

"तुरगमृगवराहश्रृगालबलिवर्दानां मेदोभिः पूर्वोक्त– पल्लवक्वथित– जलदुग्धसेकात् आम्रः सहकारो भवति।"[6]

आम के वृक्ष के फल का बीज (गुठली) अंकोलमिश्रित जल से सींचा जाय फिर छेरी के दूध और खली से जड़ में सिंचाई की जाय तो वह वृक्ष लता बन जाता है और उसका फल अत्यन्त सुगन्धित होता है–

"आम्रवृक्षबीजं अंकोलक्वथितजलेन मिश्रितं छागलीक्षीरपिण्याृकाभ्यां मूले सेकेन सुसम्पन्नः सुरभिफलो लतात्वमापद्यते।"[7]

अंकोल के काढ़े में पकाये गये नरमांस को छेरी के दुग्ध तथा खली (तिल या सरसों की) के साथ सहकार वृक्ष के जड़ में डालने से सुगन्धित तथा सदा फल देने वाला आम्रवृक्ष द्राक्षावल्ली के आकार की लता बन जाता है–

"अंकोलक्वथित स्विन्नं नृमांसं छागदुग्धयुक्।

पिण्याकसहितं मूले सहकारस्य निक्षिपेत्।।

द्राक्षावल्लीसमाकारः सहकारः सदाफलः।

जायते निश्चितं धत्ते सर्वेषामद्भुतं यदि।।[8]

अनार– हाथी, हरिण, सुअर, मछली, चाष (नीलपंखपक्षी) की चर्बी व मांस मिश्रित दुग्ध से सींचने से अनार में फल अधिक मात्रा में आते हैं–

"गजहरिणक्रोडमीनचाषवसापिशित दुग्धसेकात् दाडिमी बहुफला भवति।"[9]

© 2017 IJSRSET | Volume 3, Issue 8, November-December-2017
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1257-1264

गाय व भेड़ के मांस से मूलभाग को पूर्ण करने व उसके लेप से व उसी का धूप देने से भी अनार में बहुत अधिक फल लगते हैं–

''गोमेषपिशिताभ्यां मूलप्रदेशपूरणात् लेपात् तद्भूपाच्च दाडिमी बहुफला भवति।''[10]

सियार, धूर्तराडक नामक पशु (गीदड़) का मांस थाले में भर देने से और छेरी (बकरी) की विष्ट (लेंडी) भर देने से तथा उनके मांस मिश्रित जल से सींचने से अनार के फल बहुत अधिक मात्रा में होते हैं–

''मृगधूर्त्ताराडकाख्यपशुपललेन तथा छागविष्टाया मूलप्रदेशपूरणात् तत्पिशितजलसेकात् ऋद्धफला दाडिमी भवति।''[11]

केला–सुअर व घोड़े के मांस की अग्नि में तपाये गये लोहे की सूई से गर्भरूपलुस्थान में वेध करने या छेद करने से कदली का वृक्ष बहुत फल वाला होता है–

''क्रोडतुरगपललज्वलनतापितलोहसूच्या गर्भरूपलघुस्थाने वेधात् कदली बहुफला भवति।''[12]

हाथी के दाँत के चूर्ण की आग में तपाई गई सोने की सूई से प्रसवस्थान पर वेध करके वहीं पर सूई रख देने से केले के फल ककड़ी जैसे बड़े होते हैं–

''करिदशनचूर्णजनिताग्नि तापिककनकसूच्य प्रसवस्थानेवेधं कृत्वा सूचिस्थापनात् बालुकी समफला कदली भवति।''[13]

गधा, घोड़ा की लीद में रखकर तपाई गई शलाका (लोहे की सूई या सलाई) से मूल में तिरछा (टेढ़ा) वेध देने से कदली के वृक्ष में हाथी के सूँड के आकार का फल होता है–

''खरतुरगविण्निवेशिततापितया या शलाकया मूले।
तिर्यग्विद्धा कदली फलति फलं करिकराकारम्।।''[14]

पुरुष के मांस, वास और रक्त में हाथी दाँत का चूर्ण मिलाकर सींचने से केला आम्रफल (आम के फल के आकार का) हो जाता है–

''पुरुषमांसमेदोरक्तैः दन्तिदन्तचूर्णयुक्तसेकात् कदली आम्रफला भवति।''[15]

सुअर की चर्बी और रक्तसे तथा अंकोल के काढ़े वाले जल से सिंचित मूल वाली कदली दाडिमीफला (अनार के आकर वाले) हो जाती है–

''क्रोडवसायुक्ततद्रुधिरेण तथा अंकोलक्वथितजलेन क्वथितमूला कदली दाडिमीफला भवति।''[16.]

नारंगी—गुड़ और दूध से सिंचित करने से नारंगी (जो न फलती हो) फलने लगती है—

"गुडदुग्धाभिषेकात् नारंगी फलति।" (पुष्पवाटिकाविधिः—6)

तिल, सरसों, मैरेयासव (मैरेय नामक मद्य) विडंग, गोमांस, उड़द और दुग्ध से सेंचन करने तथा खरहे (शश) के मांस के लेप और धूप से नारंगी बड़े आकार की होती है—

"तिलसर्षपभैरेयासवविडंगगोपिशितमाषदुग्धैः सेकात् ।

शशपलललेपधूपाभ्यां च महाफला नारंगी भवति।"(पुष्पवाटिकाविधिः—7)

अंगूर—अंगूर आदि की लतायें जड़ (मूल) में बिच्छू के डंक से वेध करने, शूकर के उदर की चर्बी से सेचन करने से तथा गाये के घृत से धूप देने से सर्वदा फल देने वाले हो जाते हैं—

द्राक्ष्यादिवल्यः वृश्चिककीटककंटकेन मूलदेशे वेधात् शूकरोदरवसाया सेकाच्च—गोघृतधूपाच्च सदैव फलदा भवति।" (पुष्पवाटिकाविधिः—3)

मातुलिंग या विजौरा नींबू—

खली, मछली व चूहे के मांस तथा मदिरा इन सभी से मिश्रित जल से सेचन करने से विजौरा नींबू कूष्माण्ड (कुम्हणे) के आकार की तरह बड़े—बड़े फलते हैं.—

"पिण्याकमीनमांसमूषकमांससुरा एतत्सहितजलसेकात् कूष्माण्डप्रमाणफलाः मातलिंग भविन्त।" (पुष्पवाटिकाविधिः—4)

मातुलिंग (विजौरा नींबू) वृक्ष की जड़ में सियार का मांस रखने से मातुलिंग का फल बीजपूरक (चकोतरा) के आकार के हो जाते हैं—

"मूले मातुलिंगस्य श्रगालपिशिते दत्ते बीजपूरकणि भवति।"[17]

बेर— तिल, महुआ का चूर्ण तथा इनके समान भाग शहद से मिश्रित जल से सेंचन करने से बेर के फल बहुत बड़े आकार के हो जाते हैं—

"तिलमधूकज्येष्ठमधु एषां चूर्णैः तत्समक्षौद्रेण।

युक्तेन जलेन सेकात् बदरी अतिबृहत्फला भवति।"[18]

© 2017 IJSRSET | Volume 3, Issue 8, November-December-2017
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1257-1264

आँवला– नये फूल आने के समय तने में कुल्हाड़ी से क्षत करके तिलचूर्ण, घी, शहद का लेप करने से आँवला बहुत अधिक फलता है–

''नवपुष्पसमये स्कन्धे कुठारेण क्षतं कृत्वा तिलचूर्णघृतक्षौडलेयात् आमलकी बहुफला भवति।'' (पुष्पवाटिकाविधिः–16)

नारियल– तिल, शहद तथा मदिरा या मैरेय मद्यों में से एक मद्य विशेष से तथा भाँग, विडंग, उड़द का चूर्ण में सेंधा नमक मिलाकर रात्रि में लेप करने से जिसमें फल न आते हो ऐसे नारियल वृक्ष भी फलने लगते हैं

''तिलमधुसुरा त्रैजातिकमदिरासवमैरेयान्यतराभ्यां मद्यविशेषाभ्यां तथा भंगाकृमिघ्नमाषचूर्णैः सैन्धवलवणयुक्तैः रात्रौ लेपात् अफलापि नारिकेली फलति।''[19]

नीम– विडंग, जौ, मुलेठी, गुड़ दुग्ध के विलेपन से तथा पुनः जलदुग्ध से सेचन करने से स्वभाव से ही अतिरिक्त नीम का वृक्ष मीठे फलवाला हो जाता है–

''कृमिरिपुयवयष्टी मधुगुडदुग्धविलेपनेन निम्बतरूः।

भवति जलदुग्धसिक्तः स्वभावतिक्तोऽपि मधुरफल'।''[20]

कूष्माण्ड, वार्ताक, पटोल–कुम्हड़ा, बैंगन तथा परवल के बीज को चर्बी में भावित करके शोभित या शुद्ध पृथ्वी में बोने तथा जल से सेचन करने से सदैव बीजरहित फलों को धारण करते हैं–

''कूष्माण्डवार्ताकपटोल कादिबीजं वसाभावितमुप्तसिक्तम्।

विशोधितायां भुवि सर्वकालं फलान्यनस्थीनि माहन्ति धत्ते।।''[21]

बिल्व तथा कपित्थ– फलों के लगने के पूर्व शहद, घी, दुग्ध, गुड़ के घोल से तथा गुड़ सेंचन से बेल तथा कैथा के वृक्षों के फल सुरभियुक्त हो जाते हैं–

''फलकालात्पूर्वसमये मधुसर्पिः क्षीरगुडकल्कैः गुडैः क्रियामाण सेकात् बिल्वदाधिफलवृक्षाः सुरिभफला भवन्ति।'' (पुष्पवाटिकाविधिः–14)

कपास– जौ, तिल, पलाश इन सभी से वृद्धि को प्राप्त हुआ हो मूल जिसका तथा इनके ही जल से सेंचन को प्राप्त कपास का वृक्ष जलती हुई अग्नि के समान (पीतवर्ण) रूपवाली रूई को फलता है–

© 2017 IJSRSET | Volume 3, Issue 8, November-December-2017
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1257-1264

''यवतिलनिशापलाशैरूपचितमूला तदम्बुसिक्ता च।

ज्वलदनलोपममसकृत् कर्पासी तूलकं सूते।।'' (शा.प.:—2278)

शाल्मली की छाल, हल्दी, नीली, त्रिफला, कुठ तथा मद्य इन सबसे एक ही बार लेपन करने से कपास के फल का वर्ण तोते के पंखे के समान (हरितवर्ण का) हो जाता है—

''शाल्मलीत्वग् निशानीलीत्रिफलाकृष्ठसीधुभिः।

सकृत् लेपोपचारेण शुकपक्षनिभं भवेत।।'' (शार्ङ्धरपद्धतिः—2279)

मञ्जिष्ठ, तिल, जौ, पीतसार (पीले चन्दन की लकड़ी), जीवन्ती (एक ओषधि विशेष) के पत्तों, मनः शिला इन सबको गाय, बकरी, भेड़ के प्रचुर दुग्ध से पक्षकार लेपन करने से कपास के पृक्ष से आकाश के समान नीलवर्ण की रूई उत्पन्न होती है—

''मञ्जिष्ठातिलयवपीतसारसारै—र्जीवन्तीदलसहितैर्मनः शिलाजैः।

गोजविप्रचुरपयः श्रृतैर्विलिप्ता कर्पासी प्रसवति तूलकं खनीलम्।।''[22]

कनेर— कनेर का छोटा वृक्ष पहले मिट्टी के बर्तन खप्पर आदि में रखा जाय या कनेर का बीज पहले खप्पर में उगाया जाय फिर चार हाथ गहरे तीन हाथ चौड़े गाें में रोहू मछली के मांस व उनकी भस्म जल में मिलाकर तैयार मिट्टी में लगाया जाय तथा रोहू मछली के मांस मिश्रित जल से सींचा जाय तो कनेर (हयमार) का वृक्ष लता रूप को प्राप्त करता है—

''ह्यमारवृक्षः पूर्वं मृद्भाण्डखर्परैरूढस्तत उत्धृत्य चतुर्हस्तनिम्ने त्रिहस्तविस्तृते रोहिणीमांसैस्तद् भस्माना जलसंयुक्तरोहिणीमांसे क्वथितजलेन कृतसेकः सन् तलात्वमाप्नोति।'' (पुष्पवाटिकाविधिः तलाप्रकरणम्—1)

सन्दर्भ ग्रन्थ—

1.पुष्पवाटिकाविधिः—32

2.**पुष्पवाटिकाविधिः—8**

3. **पुष्पवाटिकाविधिः—9**

4. शार्गधरपद्धतिः—2307

© 2017 IJSRSET | Volume 3, Issue 8, November-December-2017
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1257-1264

5. पुष्पवाटिकाविधिः–19

6. पुष्पवाटिकाविधिः–20

7. पुष्पवाटिकाविधिः लताप्रकरणम्–2

8. शार्ङ्धरपद्धति :–2305–6

9. पुष्पवाटिकाविधिः–11

10. पुष्पवाटिकाविधिः–11

11. पुष्पवाटिकाविधिः–12

12. पुष्पवाटिकाविधिः–17)

13. पुष्पवाटिकाविधिः–18

14. शार्ङ्धरापद्धतिः–2302

15. पुष्पवाटिकाविधिः–27, शार्ङ्धरापद्धतिः–2304

16. पुष्पवाटिकाविधिः–27, शार्ङ्धरापद्धतिः–2303

17. पुष्पवाटिकाविधिः–5

18. पुष्पवाटिकाविधिः–15

19. पुष्पवाटिकाविधिः–13

20. शार्ङ्धरपद्धतिः–2308

21.शार्ङ्धरपद्धतिः–2298

22. शार्ङ्धरपद्धतिः–2280